*International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)*
*ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714*
*www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 3 || March 2026 || PP. 73-76*

# भारतीय समकालीन कला में देशज तत्व एवं अभिप्राय''

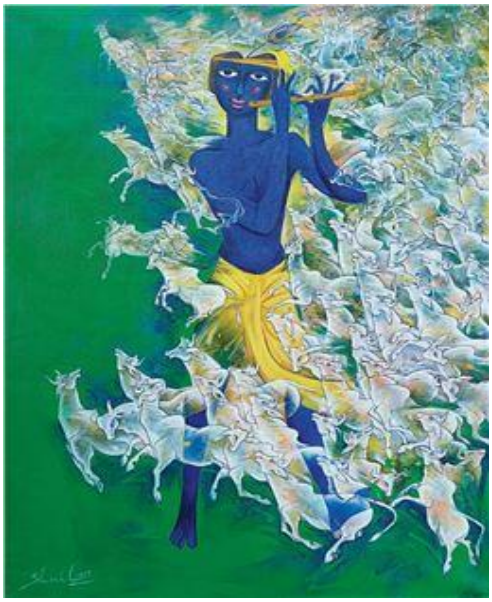
**राज कपूर**
*शोधार्थी, चित्रकला*
*एम0एच0पी0जी0 कालेज,*
*मुरादाबाद*

**प्रो0 नरेन्द्र सिंह**
*अध्यक्ष, चित्रकला विभाग*
*एम0एच0पी0जी0 कालेज,*
*मुरादाबाद*

**साराँश :–**

भारतीय समकालीन कला में देशज चेतना की अवधारणा स्वतन्त्रता के साथ ही भारत के कलाकारों में आयी। स्वतन्त्रता का उद्घोष कला क्षेत्र में भी स्वतन्त्र होने की प्रवृत्ति और देशज तत्वों एवं अभिप्रायों के समायोजन से परिवर्तित हाने लगा। कलाकारों ने यूरोप के कला आन्दोलनों से ली गयी प्ररेणा और भारतीय लधुचित्र शैली के तत्वों को आत्मसात करते हुए कृतियों का सृजन किया। चूँकि भारतीय कलाकारों ने हमेशा ही अपने स्वभाव को लचीला बनाये रखा और विभिन्न कला और संस्कृतियों को अपने साथ अवशेषित करता रहा है जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न वादों एवं कला आन्दोलन जैसे पाश्चात्य, घनवाद, प्रतीकवाद, अतियथार्थवद, अभिव्यंजनावाद, अमूर्त चित्रण, आप–आर्ट, पॉप–आर्ट और इन्स्टालेशन आदि को भी देखा जा सकता है इसके अतिरिक्त प्रेरणा स्त्रोंतों में भारतीय कलाकारों के एक समूह ने अपनी जड़ों से तथा प्राचीन प्रचलित कला शैलियों को भी प्रेरणा का स्त्रोत बनाया है।

कुँजी शब्द : देशज, घनवाद, अभिप्राय, इन्टालेशन, मनोवैज्ञानिक, चेतना, अभिव्यंजनावाद



शैल चोयल

**परिचय :–**

भारत की कला का इतिहास हजारों वर्षों में विकसित हुए एक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर सिन्धु घाटी सभ्यता, अजन्ता, बाध, सित्तनवासल, पाल, अपभ्रश, मध्यकालीन लघु चित्रों और भित्ति चित्रों आदि में निरन्तर विकास क्रम नज़र आता है, जो बहुआयामी रहा है किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्घ से लेकर सन् 1947 तक का समय भारतीय कला के लिए संक्रमण काल सिद्ध हुआ। इस कालखण्ड को स्वतन्त्रता पूर्व आधुनिक भारतीय कला के रूप में जाना जाता है। यह वह समय था जब भारतीय कलाकार पारम्परिक शैलियों और औपनिवेशिक प्रभावों के बीच अपनी एक स्वतन्त्र पहचान खोज कर रहे थे। अंग्रेजी शासन के प्रभाव, पश्चिमी शिक्षा, कला संस्थानों की स्थापना और राष्ट्रीय चेतना के उदय ने भारतीय कला शिक्षा को एक नये मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। यह काल न केवल कलात्मक प्रयोगों का था बल्कि सांस्कृतिक आत्मचेतना और राष्ट्रीय पहचान के पुनर्निर्माण का भी था। भारतीय कलाकारों ने इस दौर में यह प्रश्न



अर्पणा कौर

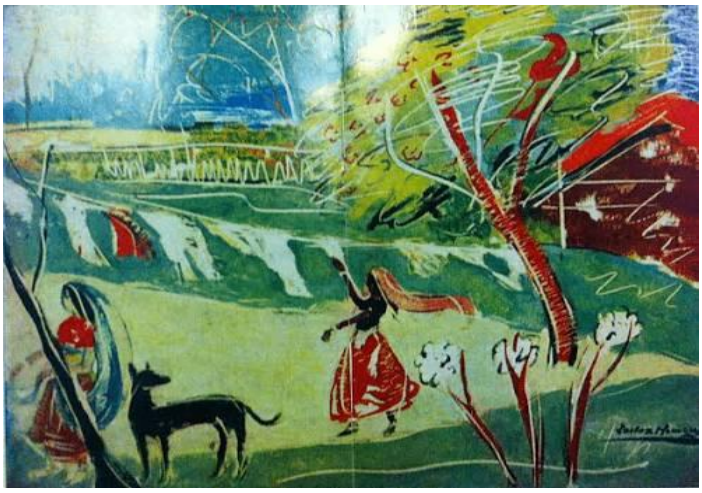
उठाया कि भारतीय कला की वास्तविक पहचान क्या है और उसे किस दिशा– में विकसित होना चाहिए।

भारतीय समकालीन ने विभिन्न कला आन्दोलनों से प्रेरित होकर चित्रांकन किया। यहाँ सबसे पहले प्रभाववादी शैली की चर्चा आवश्यक है। प्रभाववादी शैली में चित्रांकन करने वाले आरम्भिक कलाकारों में यामिनी राय का नाम आता है उन्होंने शुरूआती दृश्य चित्रों को प्रभाववादी शैली में बनाया है वही विश्व प्रसिद्ध चित्रकार हुसैन ने भी अपने आरम्भिक काल में प्रभाववादी शैली से मेल खाती विधि को दृश्य चित्रों में अपनाया।



ए0 रामचन्द्रन

एन0एस0 बेद्रे, ढोंढ और लखनऊ से रणवीर सिंह बिष्ट ने प्रभाववादी पद्धति से चित्र बनाये है। अभिव्यंजनावादी कला आन्दोलन की प्रवृत्ति जर्मन में शुरू हुई। लगभग उसी समय अभिव्यंजनावादी प्रवृत्ति फ्रॉन्स में भी ''फॉववाद'' के नाम से प्रचलित हुई जिसके प्रमुख कलाकार हेनरी मातिस थे। जर्मन कलाकार विषय–वस्तु पर अधिक बल देते थे। जबकि फ्रेन्च कलाकार चित्र के सम्पूर्ण रूपत्मक तत्वों को महत्वपूर्ण मानते थे। मातिस ने कहा था कि अभिव्यंजना मुखाकृति से प्रकट होने वाले भावों अथवा उद्वेगपूर्ण मुद्राओं में न होकर सम्पूर्ण चित्र व्यंजनापूर्ण संयोजन में होती है। जर्मन अभिव्यंजनावादी मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण एवं परिवेश के द्वारा अभिव्यंजना करने के पक्षपाती थे। जर्मनी के कलाकार एडवर्ड मुंश ने 'क्राई' नामक चित्र में अभिव्यक्ति की पराकाष्ठा को चित्रित किया। भारतीय आधुनिक कलाकारों में इस प्रकार के चित्रांकन की प्रवृत्ति हमें सर्वप्रथम रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा गगनेन्द्र नाथ टैगोर की कृतियों में दिखाई देती है। इसका भारतीय कलाकारों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रगतिशील विचारों वाले जो कलाकार केवल स्वदेशी अथवा केवल परम्परागत भारतीय के विरोधी थे उन्होंने भी इस विदेश कला प्रवृत्ति का स्वागत किया।



शैलोज मुखर्जी

भारत में फॉववाद की प्ररेणा सर्वाधिक प्रबल रूप में शैलोज मुखर्जी की कृतियों में मिलती है। जब वे पेरिस गये थे तो हेनरी मातिस से मिले थे और उसके प्रभाव से उनके चित्रों में सपाट घरातल, लम्बी आकृतियॉ, व्यंजनापूर्ण रेखाओं तथा रंगों का ताजगी पूर्ण प्रयोग हुआ। अमृता शेरगिल की कला में पर्याप्त अभिव्यंजना है किन्तु उनकी शैली पर अजन्ता का भी प्रभाव है जिस प्रकार हम शैलोज मुखर्जी पर भारतीय लधुचित्र शैली बसोहली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसके अलावा जार्ज क्रीट, कल्याण सेन, बेन्द्रे मनिषी डे, सुधीर रंजनखास्तगीर, सावक्स चावड़ा, बीजू भाई भगत, प्राणा नाथ मागों, रवि देव तथा राचशु आदि के अलावा आधुनिक चित्रकारों में हुसैन सतीश गुजराल, रामकुमार, इत्यादि अनेक चित्रकार सामने आये हैं। वास्तव में इस समय अधिकतर नये चित्रकार इसी प्रवृत्ति से सबसे अधिक प्रभावित दिखाई पड़ते हैं क्योंकि स्वच्छन्दता की इसमें पूरी गुंजाइश है।

सन् 1940 के लगभग भारत की स्वतन्त्रता के संधर्ष को दबाने के लिए अंग्रेजों ने पाशविक शक्ति का नृशंसता से प्रयाग किया जिसका परिणाम बंगाल में 'अकाल' पड़ा। देश के विभाजन, साम्प्रदायिक दंगों और कई करोड़ शरणार्थियों के आगमन ने लोगो का ह्रदय हिला दिया। ऐसे में अनेक कलाकारों ने सहज मानवीय सहानुभूमि से प्ररित होकर समाज की समस्याओं अकाल, फुटपाथों पर जीवन बिताने वाले दीन हीनों, मानवीय पीड़ाओं और निरशा, राक्षसी क्रूरता, छटपटाहट तथा मानवीय चरित्र की उद्दाम प्रवृत्तियों और पीड़ा के साथ व्यक्त किया। इन कलाकारों में जैनुल आबेदीन, सोमनाथ होर, राकिंकर बैज, डी.पी. राय चौधरी ने चित्रांकन किया।

फ्रांसिस न्यूटन सूजा, अविनाश चन्द्र के0सी0एस0 पान्निकर, के0के0 हैब्बर, लक्ष्मण पै, कृष्ण खन्ना, ए0 रामचन्द्रन, तैयब मेहता, जेराम पाटेल, कँवल कृष्ण, देवयानी कृष्ण जगमोहन चोपड़ा मनु पारेख जतीनदास, जे0 स्वामी नाथन, मोहन सामन्त, गोयतोण्ड, विवान सुन्दरम, सुधीर पटवर्धन, गणेश पाइन, गुलाम मौहम्मद शेख, रामेश्वर ब्रूटा।

भारत की कला को सबसे अधिक प्रभावित एवं प्रेरित करने वाली प्रवृत्ति व शैली घनवाद है। बीसवीं शती में यूरोपीय कला में आधारभूत परिवर्तन लाने का श्रेय घनवाद को जाता है। पिकासो तथा ब्रॉक इसके प्रवर्तक थे। दोनों ही कलाकारों का प्रभाव विश्व की कला पर पड़ा। जिससे सर्वाधिक प्रभाव पिकासो का भारत पर पड़ा आधुनिक कला में प्रभाववादी रंग योजना के समान ही रूप–निर्माण को दृष्टि घन्वाद का बहुत महत्व है। लेकिन जिस प्रकार से घनवाद को एक चुनौती के रूप में देखा था किन्तु भारत में इसे कभी चुनौती के रूप में नहीं लिया गया। यही कारण है कि यहाँ यह सामूहिक आन्दोलन के रूप में किसी पीढ़ी में नहीं दिखायी दिया। भारतीय कलाकारों को इसका पूर्ण विकसित एवं परिपक्व रूप उपलब्ध हो गया था जिसकी कुछ विशेषताओं और भारतीय तत्वों को लेकर कलाकृतियों का निर्माण किया। सर्वप्रथम सन् 1920 में गगनेन्द्र नाथ टैगोर ने घनवादी शैली में भारतीय तत्वों और अभिप्रयों का प्रयोग करते हुए चित्रांकन किया। जार्जकीट, राम किंकर, बैज बेन्द्रे आदि कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीयता और सौन्दर्य के साथ समन्वित किया। राम किंकर ने दृश्य चित्रों को घनवादी शैली में बनाते हुए भारतीय विषयों को लेकर चित्रांकन किया। राम कुमार ने बनारस के दृश्य अर्मूत घनवादी शैली में बनाये हुसैन, शान्ति दवे, के0एस0 कुलर्णी आदि ने घनवाद को भारतीय अभिप्रायों के साथ देशज रूप में प्रस्तुत किया।

भारतीय कला में देशज तत्वों को सर्वप्रथम यामिनी राय ने आधुनिक कला में ढाला। उन्होंने कालीधाट के पटचित्र शैली को अपनाया। नन्दलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी ने लोक जीवन के विषयों से प्ररेणा ली। शैलोज मुखर्जी ने बसोहली लघु चित्र शैली के तत्वों को अपनाया इसी प्रकार चावड़ा, रथीन मैत्रा, तथा नरोद मजूमदार भी लोक शैलियों से प्रभावित हुए। दक्षिण के कलाकार आलमेलकर, राजय्य, श्री निवासुलु तथा पैडी राजू भी लोक कला से प्रभावित हुए। अन्य कलाकार जिनमें लोक कला की खिलौनों के समान मुद्राओं तथा आकृतियों का प्रयोग हुआ वे हैं– जे0 सुल्तान अली, लक्ष्मण पै, डी0 बद्री, ज्योति भट्ट, भगवान कपूर, शीला औडेन, सतीश गुजराल, देवयानी कृष्ण, सुनील माधव सेन, बद्री नारायण, मकबूल फिदा हुसैन, जैराम पटेल, पी0 खेमराज, निवेदिता परमानन्द, कमला मित्तल, पारितोष सेन, सीतश दास गुप्ता तथा गौतम बधेल आदि।

भारतीय आधुनिक कला में मिथक चेतना और अभिप्रायों में चित्रांकन करने वाले कलाकारों में ए0 राम चन्द्रन, शैल चोयल, पी0जयरामन, रंगा स्वामी सारंगन तथा रेडप्पा नायडू आदि है और भारतीय लधुचित्र शैली से प्रेरणा लेकर चित्रांकन करने वाले कलाकारों में गुलाम मौहम्मद शेख, अपर्णा कौर, शैल चोयल, भूपेन खाक्खर आदि ने प्रयोग किये। भूपेन खक्खर ने स्वचलित वाहनों (मोटरा), बसो, स्कूटरों, साइकिलों) शहरी भवनों तथा बिजली के खम्भों आदि का लधुचित्रों के समान सरलीकरण तथा अंकन किया।

गुलाम मोहम्मद शेख ने तैल रंग माध्यम में लघु चित्र शैली जैसी कलाकृतियों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बनाया। महिला कलाकारों में अपर्णा कौर और नलिनी मलानी ने भी मिनियेचर के तत्वों को आत्मसात किया।

भारतीय समकालीन कला में देशज तत्व एवं अभिप्रायों का अध्ययन भारतीय कला की पहचान और उसेक विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। देशजता भारतीय कला में केवल लोकशैली, पारंपरिक प्रतीक या धार्मिक

विषय का नाम नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक अनुभव, आध्यात्मिक चेतना, प्रकृति–बोध, मिथकीय परंपरा, लोकजीवन, पारंपरिक तकनीक और भातीय दार्शनिक दृष्टि की समग्र अभिव्यक्ति है।

भारतीय कलाकारों ने देशज तत्वों को आधुनिक कला की नई भाषाओं में रूपांतरित करके यह सिद्ध किया कि आधुनिकता और परंपरा परस्पर विरोधी नहीं हैं। यामिनी रॉय ने लोक कला की दृश्य–भाषा को आधुनिक चित्रकला में पुनर्स्थापित किया रज़ा ने भारतीय दार्शनिक चेतना को रंग और ज्यामितीय प्रतीकों के माध्यम से आधुनिक अमूर्तता से जोड़ा जी0 आर0 संतोष ने तांत्रिक एवं कश्मीरी शैव चिंतन को अमूर्त संरचनाओं में रूपांतरित किया, वहीं अनेक समकालीन कलाकारों ने मिथक, लोकजीवन, स्त्री–अनुभव, प्रकृति और सामाजिक स्मृति को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया।

**निष्कर्ष –**

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय समकालीन कला में देशज अभिप्राय अतीत की निष्क्रिय स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की सक्रिय सांस्कृतिक चेतना हैं। वे भारतीय कलाकार को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिक तथा वैश्विक कला–परिदृश्य में एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। देशजता इसलिए भारतीय समकालीन कला में केवल शैलीगत विशेषता न होकर एक वैचारिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण है, जिसके माध्यम से कलाकार परंपरा को वर्तमान में पुनर्जीवित करता है और वर्तमान को भारतीय सांसकृतिक स्मृति के संदर्भ में अर्थ प्रदान करता है।

**सन्दर्भ–**

1– आधुनिक भारतीय चित्रकला, डा0 जी0के0 अग्रवाल, पृष्ठ–206
2– वही, पृष्ठ–207
3– आधुनिक चित्रकला, रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ–15
4– आधुनिक भारतीय चित्रकला, डा0 जी0के0 अग्रवाल, पृष्ठ–207
5– कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ–169
6– आधुनिक चित्रकला, रामचन्द्र शुक्ल– पृष्ठ–15
7– आधुनिक भारतीय चित्रकला, जी0 के अग्रवाल, पृष्ठ–210